अध्ययन मार्गदर्शिका: सुसमाचार लोगों की ज़रूरतों को पूरा करता है

राज्य का पूर्ण सुसमाचार - भाग 7 यह अध्ययन मार्गदर्शिका मसीही परिवारों और बाइबल अध्ययन समूहों के लिए तैयार की गई है ताकि वे मूल आलेख के मुख्य सिद्धांतों को गहराई से समझ सकें और उन पर मनन कर सकें।

1. विस्तृत अध्ययन मार्गदर्शिका (Detailed Study Guide)

सिद्धांत 1: यीशु की सेवकाई का मुख्य केंद्र और उद्देश्य

यीशु की पूरी सेवकाई का प्राथमिक ध्यान उन लोगों से भेंट करना और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना था जिनसे वे मिले। जब यीशु ने अपने चेलों को अपने नाम पर सेवा करने के लिए भेजा, तो उन्होंने उन्हें भी इसी मॉडल का पालन करने और लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने का स्पष्ट निर्देश दिया।

यीशु की सेवकाई विशेष रूप से उन लोगों पर केंद्रित थी जो "गरीब" या "कंगाल" थे। यह गरीबी केवल आर्थिक नहीं थी, बल्कि इसमें जीवन के विभिन्न आयाम शामिल थे:

- **आत्मिक रूप से गरीब:** जिन्हें परमेश्वर के साथ संबंध और उद्धार की आवश्यकता है।
- **स्वास्थ्य के लिहाज़ से गरीब:** जो बीमारियों और शारीरिक दुर्बलताओं से पीड़ित हैं।
- **शक्ति के लिहाज़ से गरीब:** जो असहाय हैं और जिनमें सामर्थ्य की कमी है।
- **सामाजिक दर्जे में गरीब:** जो समाज में हाशिए पर हैं या उपेक्षित हैं।
- **आर्थिक रूप से गरीब:** जिनके पास भौतिक संसाधनों की कमी है।

पवित्र शास्त्र का प्रमाण: *"कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं; मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"* — **मत्ती 11:5** (लूका 7:22 में भी दोहराया गया)

सिद्धांत 2: गरीबों और धनवानों की स्थिति में अंतर

गरीब लोग सुसमाचार के संदेश के प्रति अधिक ग्रहणशील क्यों होते हैं, और धनवानों के लिए इसे स्वीकार करना क्यों कठिन होता है, इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. **गरीबों की स्थिति:**
    - गरीब लोगों की ज़रूरतें होती हैं और वे यह भली-भांति महसूस करते हैं कि वे सब कुछ खुद नहीं कर सकते।
    - उन्हें मदद और समाधानों की आवश्यकता होती है, इसलिए वे सुसमाचार के संदेश और उसके द्वारा दिए जाने वाले समाधानों के लिए अपने हृदयों को खुला रखते हैं।

- परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को चुना है ताकि वे विश्वास में धनी हों और उस राज्य के अधिकारी बनें जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे प्रेम रखने वालों से की है।

पवित्र शास्त्र का प्रमाण: *"हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?"* — **याकूब 2:5**

1. **धनवानों का भटकाव:**
    - जिन लोगों के पास जीवन के हर क्षेत्र में प्रचुरता है, वे सोचते हैं कि उन्हें किसी व्यक्ति या वस्तु से मदद की आवश्यकता नहीं है।
    - अमीर होना हमेशा वैसा आशीर्वाद नहीं होता जैसा दिखता है, क्योंकि धनवान लोग अक्सर खुद को यह सोचने के लिए धोखा देते हैं कि उन्हें परमेश्वर की ज़रूरत नहीं है।
    - इस धोखे और घमंड के कारण उनके हृदय सुसमाचार के संदेश के लिए बंद हो जाते हैं।

पवित्र शास्त्र का प्रमाण: *"तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुम से सच कहता हूँ कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। तुमसे फिर कहता हूँ कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।'* — **मत्ती 19:23-24**

सिद्धांत 3: आत्मा में दीन (कंगाल) होना और अभिषेक

यीशु ने अपने प्रसिद्ध 'पर्वत पर उपदेश' की शुरुआत आत्मा में दीन लोगों को आशीष घोषित करके की। जो लोग मन से दीन हैं, वे सुसमाचार के संदेश, समाधानों और पुरस्कारों से सबसे अधिक लाभ प्राप्त करते हैं।

- **अभिषेक का उद्देश्य:** यीशु का अभिषेक ही कंगालों को सुसमाचार सुनाने, बंदियों को छुटकारा देने और पीड़ितों को राहत पहुँचाने के लिए हुआ था।

पवित्र शास्त्र का प्रमाण: *"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।"* — **लूका 4:18-19**

"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" — **मत्ती 5:3**

सिद्धांत 4: सुसमाचार की सम्पूर्णता और ईश्वरीय सामर्थ्य

यीशु मसीह का सुसमाचार केवल आत्मा के उद्धार का मार्ग दिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के हर पहलू को पूरी तरह से बदलने की सामर्थ्य रखता है:

- **सर्वांगीण बदलाव:** सुसमाचार में मनुष्य के संपूर्ण अस्तित्व — **शरीर, आत्मा और मन** — की हर शारीरिक और आध्यात्मिक ज़रूरत को पूरा करने का प्रबंध है।
- **ईश्वरीय सामर्थ्य और प्रतिज्ञाएँ:** परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ्य ने हमें जीवन और भक्ति से संबंधित सब कुछ प्रदान किया है। उन्होंने हमें बहुमूल्य और बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं ताकि हम संसार की बुरी अभिलाषाओं से उत्पन्न सड़ाहट से छूटकर ईश्वरीय स्वभाव के समभागी (भागीदार) बन सकें।

पवित्र शास्त्र का प्रमाण: *"क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं: ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।"* — **2 पतरस 1:3–4**

2. प्रश्नोत्तरी (Quiz)

बहुविकल्पीय एवं लघु उत्तर प्रश्न

1. यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान किस मुख्य बात पर अपना ध्यान केंद्रित किया?
2. स्रोत आलेख के अनुसार, यीशु ने किन ५ प्रकार के "गरीब" या "कंगाल" लोगों पर अपनी सेवकाई का केंद्र बनाया?
3. मत्ती 19:23-24 के अनुसार, धनवान व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की तुलना किस उदाहरण से की गई है?
4. धनवान लोग सुसमाचार के संदेश को प्रायः क्यों अस्वीकार कर देते हैं?
5. याकूब 2:5 के अनुसार, परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को किसलिए चुना है?
6. लूका 4:18-19 के अनुसार, यीशु का अभिषेक किन-किन कार्यों को करने के लिए किया गया था?
7. मत्ती 5:3 के अनुसार, मन के दीन (आत्मा में गरीब) लोगों के लिए क्या प्रतिज्ञा की गई है?
8. 2 पतरस 1:3-4 के अनुसार, परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ्य ने हमें क्या-क्या प्रदान किया है और इसका मुख्य उद्देश्य क्या है?

3. उत्तर कुंजी (Answer Key)

1. **उत्तर:** यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान उन लोगों की ज़रूरतों (शारीरिक और आध्यात्मिक) को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया जिनसे वे मिले।

2. **उत्तर:** यीशु ने निम्नलिखित ५ प्रकार के गरीबों पर ध्यान केंद्रित किया:
    - आत्मिक रूप से गरीब
    - स्वास्थ्य के लिहाज़ से गरीब
    - शक्ति के लिहाज़ से गरीब
    - सामाजिक दर्जे में गरीब
    - आर्थिक रूप से गरीब
3. **उत्तर:** धनवान के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने से अधिक सहज ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना है।
4. **उत्तर:** धनवान लोग अक्सर खुद को यह सोचने के लिए धोखा देते हैं कि उन्हें परमेश्वर या किसी अन्य की सहायता की आवश्यकता नहीं है, जिसके कारण उनके हृदय सुसमाचार के लिए बंद हो जाते हैं।
5. **उत्तर:** परमेश्वर ने जगत के कंगालों को इसलिए चुना है ताकि वे विश्वास में धनी हों और उस राज्य के अधिकारी बनें जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों से की है।
6. **उत्तर:** यीशु का अभिषेक निम्नलिखित कार्यों के लिए किया गया था:
    - कंगालों को सुसमाचार सुनाने
    - बन्दियों को छुटकारे का प्रचार करने
    - अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार देने
    - कुचले हुओं को छुड़ाने
    - प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करने
7. **उत्तर:** मन के दीन लोग "धन्य" हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। वे सुसमाचार के संदेश को सुनने और ग्रहण करने के लिए अधिक खुले होते हैं।
8. **उत्तर:** ईश्वरीय सामर्थ्य ने हमें सब कुछ दिया है जो जीवन और भक्ति से संबंध रखता है, तथा बहुमूल्य और बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं। इसका उद्देश्य यह है कि हम संसार की बुरी अभिलाषाओं की सड़ाहट से छूटकर ईश्वरीय स्वभाव के समभागी बन सकें।

4. निबंधात्मक प्रश्न (Essay Questions)

ये प्रश्न परिवार या अध्ययन समूह में विचार-विमर्श और व्यक्तिगत आत्मचिंतन के लिए हैं:

1. **गरीबी के विभिन्न आयाम और सुसमाचार की स्वीकार्यता:** आलेख में केवल आर्थिक गरीबी की बात नहीं की गई है बल्कि ५ प्रकार की कमियों/गरीबी का उल्लेख है। इस बात पर चर्चा करें कि जब कोई व्यक्ति किसी भी क्षेत्र (स्वास्थ्य, समाज, शक्ति या आत्मा) में स्वयं को असहाय महसूस करता है, तो वह सुसमाचार के समाधानों के प्रति अधिक खुला क्यों हो जाता है?
2. **धनवानों का आत्म-छलावा और आत्मिक संकट:** "धनवान होना हमेशा वह आशीर्वाद नहीं होता जैसा दिखता है।" स्रोत के प्रकाश में विश्लेषण करें कि भौतिक समृद्धि किस प्रकार मनुष्य को इस धोखे में डाल सकती है कि उसे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है? इससे बचने के लिए मन की दीनता क्यों आवश्यक है?
3. **सुसमाचार द्वारा संपूर्ण जीवन का रूपांतरण:** 2 पतरस 1:3-4 और यीशु के चमत्कारों के आधार पर स्पष्ट करें कि सुसमाचार केवल मरने के बाद स्वर्ग जाने का मार्ग नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के शरीर, आत्मा और मन की वर्तमान ज़रूरतों को कैसे पूरा करता है?

5. शब्दावली (Glossary)

शब्द / पद	परिभाषा व अर्थ (स्रोत आलेख के अनुसार)
मन के दीन / आत्मा में गरीब	वे लोग जो अपनी आत्मिक कमी और असहायता को स्वीकार करते हैं, यह समझते हैं कि वे सब कुछ खुद नहीं कर सकते, और परमेश्वर के सुसमाचार व समाधानों को ग्रहण करने के लिए खुले रहते हैं।
कंगाल / गरीब	वे व्यक्ति जिनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में (आर्थिक, शारीरिक स्वास्थ्य, शक्ति, सामाजिक दर्जा या आत्मा) भारी कमी या ज़रूरत होती है।
राज्य का पूर्ण सुसमाचार	परमेश्वर का वह सुसमाचार जो मनुष्य के संपूर्ण जीवन (शरीर, आत्मा और मन) की शारीरिक और आध्यात्मिक ज़रूरतों को पूरा करने की सामर्थ्य रखता है।
ईश्वरीय सामर्थ्य	परमेश्वर की वह असीमित शक्ति जिसने विश्वासियों को जीवन और भक्ति से संबंधित सब कुछ और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ प्रदान की हैं।
ईश्वरीय स्वभाव के समभागी	संसार की सांसारिक व बुरी अभिलाषाओं से उत्पन्न सड़ाहट से मुक्त होकर परमेश्वर के पवित्र और सिद्ध स्वभाव में सहभागी या भागीदार होना।

सूई का नाका	मत्ती 19:24 में प्रयुक्त एक रूपक, जो यह दर्शाने के लिए उपयोग किया गया है कि धन के घमंड में डूबे व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है।